बच्छराज डोसी ने स्वीकारा ''संथारा''

संथारा है आत्मशुद्धि का महान उपक्रम – मुनि सुमेरमल

सुजानगढ़, 22 नवम्बर।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ समाज के वरिष्ठ श्रावक एवं कांग्रेस के चर्चित कार्यकर्त्ता स्व. जुगराज डोसी के पिता बच्छराज डोसी ने जैन धर्म की महान आत्मोत्थान की पद्धति –'संथारा' को स्वीकार किया। उन्होंने आचार्य महाप्रज्ञ के सुशिष्य एवं अपने संसार पक्षीय अनुज भ्राता मुनि सुमेरमल 'सुदर्शन' के द्वारा आजीवन आहार और पानी न ग्रहण करने का नियम लेते हुए संथारे का प्रताख्यान किया। शुरू से ही धार्मिक प्रवृत्ति के रहे 83 वर्षीय बच्छराज डोसी ने दो दिन पूर्व ही अपने मन से संथारे को स्वीकार कर लिया था। आज आचार्य महाप्रज्ञ की अनुमति से मुनि सुमेरमल ने विधिवत आगमिक सूत्रों के उच्चारण एवं महामंत्रोच्चार के साथ संथारा स्वीकार करवाया। इस अवसर पर उपस्थित पारिवारिकजन एवं जैन समाज के जनमान्य व्यक्तियों के समुख संथारे की प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हुए मुनि सुमेरमल ने कहा कि संथारा आत्मशुद्धि का महान उपक्रम है।

उल्लेखनीय है कि बच्छराज डोसी का परिवार समाज में प्रतिष्ठित होने के साथ राजनीति में भी विशेष पहचान रखता था। डोसी के सुपुत्र जुगराज डोसी कांग्रेस के चर्चित कार्यकर्त्ता थे। उनके दिवंगत होने पर स्वयं अशोक गहलोत उनके घर पर पहुंचे थे।

उनके ज्येष्ठ सुपुत्र पुखराज डोसी ने बताया कि पिताश्री के संथारा स्वीकारने के समाचार मिलते ही देश के अन्य प्रांतों में प्रवासित रिस्तेदार एवं कस्बे के आस–पास से लोगों का आना शुरू हो गया। उन्होंने बताया कि मुनि सुमेरमलजी मुनि मदनकुमारजी आदि संतों के द्वारा स्वाध्याय आदि करवाया जाता है।

डोसी के संथारे पर आये संदेश

आत्मा भिन्न शरीर भिन्न का अनुभव करें : आचार्य महाप्रज्ञ

सुजानगढ़ 24 नवम्बर।

कस्बे में जैन श्वेताम्बर तेरापंथ समाज के वरिष्ठ श्रावक बच्छराज डोसी के चल रहे संथारे पर राष्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ, युवाचार्य महाश्रमण, साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने पड़िहारा से विशेष संदेश भेजे हैं। आचार्य महाप्रज्ञ ने अपने संदेश में डोसी को श्रद्धालु श्रावक बताते हुए कहा कि उन्होंने आश्चर्यकारी ढंग से अनशन स्वीकार किया है। अनशन काल में आत्मा भिन्न शरीर भिन्न का अनुभव करें। आचार्य महाप्रज्ञ ने पारिवारिकजनों को आध्यात्मिक वातावरण बनाए रखने की प्रेरणा दी है।

युवाचार्य महाश्रमण ने अपने संदेश में कहा कि बच्छराज डोसी ने अनशन स्वीकार कर एक शूरवीरता का काम किया है। उन्होंने मनोबल के साथ परिणामों को निर्मलतर बनाने और जप स्वाध्याय आदि का प्रयोग चलाने की प्रेरणा दी है। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने अपने संदेश में कहा कि श्रावक के तीन मनोरथों में तीसरा मनोरथ अनशन अर्थात संथारा है। संथारा मृत्यु की अद्भूत कला है। भगवान महावीर ने जीने की कला के साथ मृत्यु की कला का प्रशिक्षण दिया है। संथारा उसी की निष्पति है। उन्होंने डोसीजी के अनुजभ्राता मुनि सुमेरमल सुदर्शन आदि संतों का आध्यात्मिक सहयोग उनकी इस विशिष्ट यात्रा को सफल एवं सार्थक बनाएगा ऐसा विश्वास जताया है।

चौबीसों घंटो चलता है जप और भजन

बच्छराज डोसी के संथारे पर उनके पारिवारिकजन चौबीसों घंटे ही जप और आध्यात्मिक भजनों का श्रवण करवाते हैं। डोसी के सुपुत्र पुखराज डोसी ने बताया कि मुनि सुमेरमल आदि मुनिजनों के अलावा पारिवारिकजन एवं कस्बे के महिला पुरूष चौबीस घंटों की नमस्कार महामत्र का जप एवं आध्यात्मिक भजनों का श्रवण करवाते हैं।